जयपुर की विकास में राजस्थान के ऐतिहासिक धरोहरों का समेकित अध्ययन

JAYOTI VIDYAPEETH WOMEN'S UNIVERSITY
बेटी बचाओ ,बेटी पढ़ाओ डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध की रूपरेखा

शोध निर्देशक। शोधकत्री
डॉ ललित पांडे मनीषा पारीक
ph.d(history)
Jvr-I/22/10077
शोध केंद्र
शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग संकाय
ज्योति विद्यापीठ विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

प्रस्तावना:- जयपुर शहर भारत देश के सबसे बड़े राज्य राजस्थान की राजधानी है। यह राजस्थान का सबसे बड़ा शहर है। जयपुर को पिंक सिटी अथवा गुलाबी नगरी भी कहते हैं, इसको सबसे पहले स्टैनली रीड ने पिंक बोला था।

जयपुर की स्थापना आमेर के महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय ने की थी। यूनेस्को द्वारा जुलाई 2019 में जयपुर को विश्व विरासत धरोहर का दर्जा दिया गया है।

जयपुर अपनी समृद्ध भवन निर्माण परंपरा सरस संस्कृति और ऐतिहासिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है। यह शहर तीन ओर से अरावली पर्वत माला से घिरा हुआ है। जयपुर शहर की पहचान यहां के महलो और पुराने घरों में लगी गुलाबी धौलपुरी पत्थरो से होती है।
इस शहर का हर मार्ग समकोण पर दिखाई देता है। इस कारण राहगीर रास्ता नहीं भटक सकता है, किसी भी गली या मोहल्ले से निकलो वह सड़क के मुख्य मार्ग पर आ जाता है।

1

परिचय:- जयपुर को आधुनिक शहरी योजना कारों द्वारा सबसे नियोजित और व्यवस्थित शहरों में से गिना जाता है।
शहर के वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य का नाम आज भी प्रसिद्ध है।

जयपुर शहर का निर्माण सवाई जयसिंह या जयसिंह द्वितीय ने सन 1727 में करवाया था। यहां के मुख्य उद्योगों में धातु ,संगमरमर ,वस्त्र, छपाई हस्तकला, रतन व आभूषण का आयात निर्यात तथा पर्यटन आदि शामिल है। जयपुर को भारत का पेरिस भी कहा जाता है।

इस शहर का विकास धीरे-धीरे होता गया और यह चरमोत्कर्ष पर पहुंच गया। सामाजिक ,राजनीतिक, ऐतिहासिक दृष्टि से भी यह शहर महत्वपूर्ण है।

2

शोध अध्ययन की आवश्यकता:- जयपुर शहर की ऐतिहासिक धरोहरों को देखने के लिए लाखों विदेशी सैलानी भ्रमण के लिए आते हैं। यहां के त्यौहार ,रंग रूप अपनी अलग विशेषता बताते हैं। जो विदेशी लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं तथा इसकी स्थापत्य कला के कारण यह पर्यटकों के आकर्षक का केंद्र है।

यह शहर छोटी काशी के नाम से भी प्रसिद्ध है। यह एक धार्मिक स्थल है। जयपुर के राजा महाराजाओं ने अनेक मंदिरों का निर्माण करवाया तथा कई तरह की कुऔ,बावडियों का निर्माण जयपुर के शासकों के द्वारा किया गया। अनेकों प्रकार की बहुमूल्य, बेशकीमती पत्थरो का प्रयोग मंदिरों के निर्माण में भी हुआ।

जयपुर शहर का विकास कैसे हुआ इसके विकास में किन-किन शासकों ने अहम भूमिका निभाई तथा कौन से ऐतिहासिक धरोहर हैं ,जो इसके विकास में सहायक रहे ।इन सब का पता लगाने के लिए मैंने इस विषय का चयन किया है।

3

शोध का महत्व:- जयपुर शहर पर शोध करने का महत्व इस कारण बढ़ गया है कि यहां पर घूमने के लिए खूबसूरत जगह हैं। जो हमें अपनी ओर खींचती है। यहां ना तो ज्यादा गर्मी और ना ही ज्यादा सर्दी पड़ती है बारिश के मौसम में जयपुर का सौंदर्य और ज्यादा बढ़ जाता है। यह बाहर से आने वाले पर्यटकों का मन मोह लेता है। आमेर का किला सबसे प्रसिद्ध जगह में से एक है। और पर्यटकों द्वारा सबसे ज्यादा पसंद किया जाता है। जिसका निर्माण 1592 ईस्वी में महाराजा मानसिंह द्वारा करवाया गया था। आमेर का किला लाल बलुआ पत्थर और संगमरमर से बनाया गया था।

दूसरा दर्शनीय स्थल हवामहल है, यह पांच मंजिला इमारत है, जो 1778 में महाराजा सवाई प्रताप सिंह के द्वारा बनाया गया था इस महल में 953 खिड़कियां है।

सवाई जयसिंह के द्वारा वेधशाला का निर्माण किया गया। वे स्वयं ज्योतिष विद्या के ज्ञाता व संरक्षक थे। उन्होंने उत्तरी भारत के 5 नगरों दिल्ली, बनारस ,मथुरा ,उज्जैन व जयपुर में वेधशाला बनवाई। जयपुर नगर की ठीक ऊपर पहाड़ियों पर नाहरगढ़ का दुर्ग स्थित है, जिसका निर्माण जय सिंह ने करवाया था। नाहर सिंह भोमिया का स्थान होने के कारण नाहरगढ़ के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

जयपुर से लगभग 10 किलोमीटर दूर पहाड़ियों में गलता तीर्थ स्थित है। जहां ब्रहमा जी के पोते गालव ऋषि ने यहां तपस्या की थी, इस कारण यह स्थान गलता कहलाया।

श्री गोविंद देव जी का मंदिर ,चांदपोल के हनुमान जी ,गढ़ गणेश ,मोती डूंगरी ,लक्ष्मी नारायण मंदिर ,शीला माता का मंदिर इत्यादि अनेक आस्था के केंद्र हैं जो हमें अपनी ओर आकर्षित करते हैं। जयपुर शहर के धरोहरो का अपना अलग महत्व है। शहर की शहरी योजना प्राचीन हिंदू और आधुनिक मुगल के साथ -साथ पश्चिमी संस्कृतियों के विचारों के आदान-प्रदान को दर्शाती है। शहर के प्रतिष्ठित स्मारकों में गोविंद देव मंदिर, सिटी पैलेस ,जंतर मंतर ,हवा महल आदि शामिल है। महाराजा सवाई जयसिंह ने जयपुर को नो आवासीय खंडों में बसाया ,जिन्हें चौकड़ी कहा जाता है, इनमें सबसे बड़ी चौकड़ी राज महल है।

जयपुर को विश्व के 10 सबसे खूबसूरत शहरों में शामिल किया गया । एशिया की सबसे बड़ी आवासीय बस्ती मानसरोवर, राज्य का सबसे बड़ा चिकित्सालय सवाई मानसिंह चिकित्सालय ,विधानसभा भवन ,अमर जवान ज्योति ,एम आई रोड ,सेंट्रल पार्क और विश्व के प्रसिद्ध बैंक शामिल है ,जयपुर में मेट्रो भी बनाई गई है।

5,6

समस्या का चयन:-' जयपुर जिले की विकास की ऐतिहासिक धरोहर ओ का समेकित अध्ययन'

जयपुर शहर या इसके आसपास के जो क्षेत्र है ,वे अपने रूप, रंग व आकार को लुप्त करते जा रहे हैं। आने वाली पीढ़ी को मालूम होना चाहिए कि उनका जयपुर शहर इससे पहले कैसा था तथा इस को विकसित करने में किसने सहयोग किया। कई बांध या सांस्कृतिक धरोहर ,कला नष्ट हो रही है ,

उनको किस तरह सहेज कर रखा जा सकता है।

इसलिए मैंने इस शोध -विषय को चुना ताकि में स्थानीय लोगों या पुस्तकों से इस शोध -विषय के बारे में पढ़कर या जानकारियां हासिल कर शोध कार्य कर सकूं ।

7

शोध समस्या का उद्देश्य:- जयपुर जिले में कुल 19 विधानसभा क्षेत्र हैं, जिनकी बारे में शोध कार्य करूंगी जो निम्न प्रकार है और इनके ऐतिहासिक धरोहरों का अध्ययन किया जाएगा

1. सांगानेर
2. विद्याधर नगर
3. मालवीय नगर
4. किशनपोल
5. विराटनगर
6. शाहपुरा
7. चाकसू
8. फुलेरा
9. सिविल लाइंस

10. आमेर
11. झोटवाड़ा
12. दूदू
13. आदर्श नगर
14. जमवारामगढ़
15. चोमू
16. हवा महल
17. बगरू
18. बस्सी
19. कोटपुतली

शोध का परिसीमन:- प्रस्तुत शोध कार्य जयपुर जिले के

जयपुर के आसपास के ऐतिहासिक धरोहरों तक ही सीमित है।

1. विद्यालयवार:- सरकारी व निजी दोनों प्रकार से शोध कार्य किया जाएगा।

2. कक्षावार:- प्राथमिक स्तर , उच्च प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम के आधार पर विषय को सम्मिलित करना है।

3. उपकरण:- प्रस्तुत शोध में नवनिर्मित एवं प्रमाणित कृत उपकरण तैयार किया जाएगा।

4. भाषावार:- शोध में हिंदी को प्रमुखता दी जाएगी।

उपकरण:- प्रस्तुत शोध कार्य में शोधाथी के द्वारा पुस्तकालय से प्राप्त पुस्तकों व अखबार तथा अन्य तथ्यों के आधार पर जानकारी प्रस्तुत की गई।

संबंधित साहित्य का अध्ययन:- जयपुर शहर की विभिन्न ऐतिहासिक व प्रसिद्ध किले हैं।

1. आमेर किला
2. जयगढ़ किला
3. नाहरगढ़ का किला

जयपुर शहर की प्रमुख पैलेस व महल

1. सिटी पैलेस
2. हवा महल
3. जल महल
4. मुबारक महल
5. बादल महल

जयपुर की प्रमुख बाग व उद्यान

1. कनक वृंदावन बाग
2. जय निवास बाग
3. विद्याधर बाग
4. रामनिवास बाग
5. माजी का बाग

जयपुर में आने जाने के साधन

जयपुर में आने व घूमने के लिए बस ,रेलगाड़ी ,परिवहनो व मार्गों द्वारा आ जा सकते हैं।

1. भारतीय रेलवे द्वारा
2. भारतीय हवाई अड्डा द्वारा
3. भारतीय राजमार्गों द्वारा
4. जयपुर की मेट्रो व ऑटो रिक्शा द्वारा।

जयपुर महाराजाओं की 1573 से 1949 तक प्राप्त वंशावलियां

1. राजा भगवानदास 1573 से 1589

जयपुर के राजाओं में राजा भगवानदास से हमें तथा बाद के राजाओं का इतिहास प्राप्त होता है, यह आमेर के 23कछवाहा शासक थे ।अकबर की अधीनता स्वीकार कर उसके साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किए थे।

2. राजा मानसिंह प्रथम 1589 से 1614

वह अकबर की सेना के प्रधान सेनापति थे ।उन्होंने आमेर की मुख्य महल का निर्माण करवाया। इन्होंने हल्दीघाटी के युद्ध का मोर्चा संभाला था।

3. मिर्जा राजा जयसिंह 1621 से 1667

इनसे पहले मान सिंह व भाव सिंह कुछ समय तक शासक रहे थे। भाव सिंह के

निसंतानहोने पर मरने के बाद जय सिंह को 10 वर्ष की आयु में आमेर का शासक घोषित किया गया।

4. राजा राम सिंह 1667 से 1689

औरंगजेब ने इनका राजतिलक किया था ।और राजा की उपाधि प्रदान कर आमेर का शासक घोषित किया था।

5. राजा बिशन सिंह 1689 से 1699

राजा बिशन सिंह को जाटों के विद्रोह का सामना करना पड़ा था।

6. महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय 1699 से 1743

संस्कृति का संरक्षण सवाई जय सिंह विद्वान व वीर तथा जयपुर का संस्थापक था।

7. सवाई ईश्वरी सिंह 1743 से 1750

संघर्ष का समय रहा और समस्याओं के कारण आत्महत्या के द्वारा इनका अंत हुआ।

8. सवाई माधो सिंह 1750 से 1767

राजस्थान सरकार ने 15 मई 1949 में सवाई माधोपुर शहर को सवाई माधव सिंह के नाम पर जिला बनाकर उनके द्वारा स्थापित शहर का सम्मान बढ़ा दिया।

9. सवाई पृथ्वी सिंह 1767 से 1778

घोड़े से गिरने के कारण 15 वर्ष की उम्र में इनका देहांत हो गया था।

10. सवाई प्रताप सिंह 1778 से 1803
महाराजा प्रताप सिंह जी कला और काव्य के प्रेमी थे । यह विद्वानों का बड़ा आदर करते थे।

11. सवाई जगत सिंह 1803 से 1818
मेवाड़ के महाराणा की बेटी कृष्णा कुमारी के कारण जोधपुर व जयपुर के राजा में युद्ध हुआ था।

12. सवाई जय सिंह तृतीय 1818 से 1835

13. सवाई राम सिंह 1835 से 1880
16 माह में राज्य अभिषेक हुआ था ,जनता को अपने महाराणा के दर्शन 10 वर्ष की उम्र में हुई थे।

14. सवाई माधो सिंह दितीय 1880 से 1922
यह महाराजा सवाई राम सिंह की दत्तक पुत्र थे उन्होंने स्त्री शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया था।

15. सवाई मानसिंह 1922 से 1949
लेफ्टिनेंट जनरल महाराजा सवाई श्री मानसिंह जयपुर रियासत की 39वे एव अंतिम शासक थे।

14

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी:-

जयपुर गुलाबी शहर के नाम पर मशहूर है जो कि पश्चिमी भारत के राजस्थान राज्य की राजधानी है।
जयपुर जिले का कुल क्षेत्रफल- 11,117 वर्ग किलोमीटर है।
जिस का औसत जनसंख्या घनत्व-470 व्यक्ति वर्ग किलोमीटर है।
2001 की जनगणना के अनुसार आबादी -5252338 है।
इसमें ग्रामीण व शहरी जनसंख्या बराबर है।
जयपुर जिला राजस्थान के पूर्वी भाग में है।
यह उत्तर की ओर से सीकर और हरियाणा राज्य के महेंद्रगढ़ से घिरा है।
इसकी दक्षिण में टोंक जिला ,पूर्व में सवाई माधोपुर ,और दोसा जिले हैं।
राज्य की राजधानी होने के कारण जयपुर में विधानसभा भी है।
13पंचायत समितियां और 2369गांव है।
जयपुर की जलवायु शुष्क है ।गर्मियों में जयपुर का मौसम बहुत गर्म और सर्दियों में बहुत ठंडा रहता है।

15

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

डॉ चंद्रमणि सिंह पुरोहित प्रकाशन, जयपुर 1973

मोहित कुमार 28-2 -2022

हनुमान शर्मा शब्द महिमा प्रकाशन ,जयपुर।

6

16

10